International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# प्राथमिक स्तर के छात्रों का उनकी सांस्कृतिक पहचान के निर्माण के सन्दर्भ में बिहार बोर्ड कक्षा 5 की हिंदी की पाठयपुस्तक का अध्ययन

**Geeta Shukla[1], Dr. Bandana Kumari[2]**

[1]Ph.D Researcher, School Of Educational Training & Research, Aryabhatta Knowledge University, Patna
[2]Principal, Hnsite, Sasaram, School Of Educational Training & Research, Aryabhatta Knowledge University, Patna

**शोध सारांश:**
किसी भी देश की संस्कृति ही विश्व पटल पर उसे एक अलग पहचान देती है| दुनिया के सभी देश के नागरिक अपने सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करते हैं तथा उसके संवर्धन का अनवरत प्रयास करते रहते हैं| अतः यह आवश्यक है कि देश का प्रत्येक नागरिक अपने देश की सांस्कृतिक विशेषताओं को जाने,समझे तथा आत्मसात करे | इसके लिए आवश्यक है कि बच्चे जो देश के भावी नागरिक होंगे,उन्हें इसकी उचित शिक्षा दी जाए |
स्कूली शिक्षा में पाठयपुस्तकों का अत्यधिक महत्त्व है | शिक्षा को एक आकार देने में,दिशानिर्देशन में पुस्तकों की महती भूमिका है | प्रस्तुत शोधपत्र में कक्षा 5 बिहार बोर्ड की भाषा हिंदी की पाठयपुस्तक का अध्ययन छात्रों की सांस्कृतिक पहचान के निर्माण के सन्दर्भ में किया गया है | प्रस्तुत शोध अध्ययन में विषयवस्तु विश्लेषण प्रविधि का उपयोग किया |

**मुख्य शब्द :** विरासत , सांस्कृतिक पहचान, पाठयपुस्तक,बिहार बोर्ड, कक्षा 5, विषयवस्तु-विश्लेषण

भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा संस्कृति का निर्माण, हस्तांतरण और संरक्षण तीनों ही होता है | भाषा की रचनाओं में ही संस्कृति के मूल तत्व निहित होते हैं| किसी भी देश की पहचान उसकी संस्कृति से ही होती है| भाषा में ही सारे ज्ञान, विज्ञान समाहित होते हैं|भाषा जितनी समृद्ध होगी, उतना ही उस देश का ज्ञान विज्ञान विकसित होगा|
प्रस्तुत शोधपत्र में संस्कृति से तात्पर्य मनुष्य के संपूर्ण सामाजिक विरासत से है|किसी भी समाज के लोगों का संपूर्ण जीवन जीने का तरीका उनके व्यवहार प्रतिमानों का सीखा अथवा उपार्जित तरीका होता है |अतः संस्कृति उन व्यवहार प्रतिमानों का संदर्भ है जिसे मनुष्य सामाजिक रूप में विरासत से प्राप्त करता है |

## संस्कृति की परिभाषाएं

Taylor के अनुसार संस्कृति वह संपूर्ण जटिलता है जिसमें ज्ञान, विश्वास ,कला , नैतिकता ,प्रथाएँ, रीति रिवाज, कानून तथा वे सभी क्षमताएं एवं गुण सम्मिलित होते हैं जिन्हें मानव समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है|
मैकाइवर एवं पेज के अनुसार संस्कृति मूल्यों, शैलियों, भावात्मक लगावों, बौद्धिक अभियानों का संसार है |इसलिए संस्कृति सभ्यता का प्रतिवाद है |यह हमारे रहने और सीखने के ढंगों, कार्यकलापों, कला ,साहित्य ,धर्म, मनोरंजन, एवं आनंद में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है|

मैलिनोवस्की के अनुसार संस्कृति जीवन व्यतीत करने की एक संपूर्ण विधि है जो कि व्यक्ति की शारीरिक मानसिक एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करती है और उसे प्रकृति के बंधनों से मुक्त करती ह

श्यामधर सिंह के अनुसार मानवीय संस्कृति दो प्रकार की होती है| प्रथम भौतिक वस्तुएं या मूर्त वस्तुएं जिन्हें मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाता है |जैसे –उपकरण, औजार, .बर्तन ,वस्त्र,मकान, मंदिर, महल, मूर्तियां इत्यादि|

संस्कृति का द्वितीय स्वरूप संस्कृत का अभौतिक स्वरूप होता है जिसे बौद्धिक या अमूर्त स्वरूप भी कह सकते हैं इसमें ज्ञान, विश्वास, आदर्श, चरित्र एवं मूल्य इत्यादि का अध्ययन तथा संवर्धन होता है|

**प्रस्तुत शोध पत्र का शीर्षक:**

**प्राथमिक स्तर के छात्रों को उनकी सांस्कृतिक पहचान के निर्माण के सन्दर्भ में बिहार बोर्ड कक्षा 5 की हिंदी की पाठयपुस्तक का अध्ययन**

**शोध में प्रयुक्त पदों की पारिभाषिक शब्दावली**

**कक्षा 5** :कक्षा 5 के स्तर के छात्र 10 से 11 वर्ष के आयु समूह के होते हैं | प्रख्यात शिक्षा शास्त्री पियाजे के अनुसार इन्हें मूर्त क्रियात्मक अवस्था में रखा जाता है |इस आयु स्तर के छात्र-छात्राओं में बाहरी वातावरण से जुड़ने तथा जानकारियां एकत्रित करने तथा नए-नए ज्ञान विज्ञान के तथ्यों को समझने के प्रति अत्यधिक रुचि होती है|

**बिहार बोर्ड**: इसे बिहार विद्यालय परीक्षा समिति भी कहा जाता है |इसकी स्थापना बिहार विद्यालय परीक्षा समिति अधिनियम 1952 के अंतर्गत 1 अप्रैल 1952 को की गई थी |यह कक्षा एक से 12वीं तक के पठन- पाठन और मूल्यांकन का कार्य करता है|

**पाठ्यपुस्तक** : पाठ्य पुस्तक शैक्षिक संचालन और शैक्षिक मार्गदर्शन के लिए बहुत आवश्यक होती है |पाठ्य पुस्तक शैक्षिक प्रगति को गति देती हैं |भटकाव से बचाती हैं पाठ्य पुस्तक छात्रों की औसत आवश्यक योग्यताओं को ध्यान में रखकर तैयार की जाती है| यह शिक्षक तथा अधिगम को रुचिकर व्यवस्थित औरसुगम बनाती है|

**विषय वस्तु विश्लेषण:** विषय वस्तु विश्लेषण में अध्ययन किए जाने वाले तथ्यों का भाषागत अभिव्यक्तियों द्वारा अंतर्वस्तु का विश्लेषण किया जाता है |निहित सामग्रियों का विश्लेषण किया जाता है| अंतर्वस्तु विश्लेषण की सामग्रियां व्यक्त होती है इसलिए ये विषय के अनुरूप होती है | अंतर्वस्तु विश्लेषण को वस्तुनिष्ठ, क्रमबद्ध ,तथा परिमाणात्मक वर्णन के रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक होता है| इस विश्लेषण में सबसे छोटी इकाई जो प्रयुक्त की जाती है वह है शब्द|

**प्रस्तुत शोध में पाठ्य पुस्तक के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त इकाइयां (शब्द)**

विज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, प्रथाएं, रीति रिवाज, कानून, अनुशासन, क्षमता,मनोरंजन, आनंद, प्रकृति प्रेम, राष्ट्र प्रेम, कला, आनंद, प्रकृति प्रेम, राष्ट्र प्रेम,ईश्वरीय प्रेम, मानवता, जीवन जीने की कला, आदर्श इत्यादि|

**विश्लेषण के लिए स्व निर्मित प्रश्न**

इकाइयों के अध्ययन के लिए स्व निर्मित प्रश्न तैयार किया जिसके आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किया गया ---

1. सामग्री रूचिकर है|
2. सामग्री छात्रों की क्षमता के अनुरूप है |
3. छात्रों की जिज्ञासा के समाधान हेतु उपयुक्त है|
4. छात्रों की सीखने की दिशा में अग्रसर करती है|
5. जीवन जीने की कला सिखाती है |

6. प्रकृति प्रेम का संवर्धन करती है|
7. राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत करती है|
8. मानवता तथा ईश्वरीय प्रेम सिखाती है |
9. मूल्यों तथा आदर्श चरित्र के निर्माण की आधारशिला रखती है |
10. ज्ञान तथा विज्ञानं को जोड़ने की एक कड़ी के रूप में कार्य करती है|

**अध्ययन तथा निष्कर्ष**

अध्ययन के लिए निर्धारित इकाइयों(शब्दों) को पाठयपुस्तक के प्रत्येक पाठ के सन्दर्भ में अध्ययन किया| प्रत्येक इकाइयों के अध्ययन के लिए उपर्युक्त प्रश्नों की सहायता ली गई| जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे इस प्रकार हैं|

| अध्ययनके प्रश्न | प्राप्त निष्कर्ष |
|---|---|
| १.सामग्री रूचिकर है| | 95% |
| २.सामग्री छात्रों की क्षमता के अनुरूप है | | 93% |
| ३.छात्रों की जिज्ञासा के समाधान हेतु उपयुक्त है| | 90% |
| ४.छात्रों की सीखने की दिशा में अग्रसर करती है| | 90% |
| ५.जीवन जीने की कला सिखाती है | | 40% |
| ६.प्रकृति प्रेम का संवर्धन करती है| | 30% |
| ७.राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत करती है| | 15% |
| ८.मानवता तथा ईश्वरीय प्रेम सिखाती है | | 20% |
| ९.मूल्यों तथा आदर्श चरित्र के निर्माण की आधारशिला रखती है | | 40% |
| १०.ज्ञान तथा विज्ञानं को जोड़ने की एक कड़ी के रूप में कार्य करती है| | 5% |

प्राप्त परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि यह पुस्तक एक उत्तम पुस्तक है | इसमें जीवन जीने की कला तथा मूल्यों एवं आदर्श चरित्र के निर्माण पर सर्वाधिक प्रयत्न किया गया है| मूर्त स्वरूपों पैर अधिक सामग्री दी गई है तथा अमूर्त स्वरूपों पर आनुपातिक रूप से कुछ कम सामग्री प्रदान की गई है|

**सुझाव**

प्राप्त निष्कर्षों के आलोक में यह द्रष्ट्द्रव्य है कि इसमें आदर्श चरित्रों तथा प्रार्थना या ईश्वर वंदना के लिए सामग्री नहीं है जो कि हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं | अतः भविष्य में पाठयपुस्तक निर्माण में इन तत्वों का समावेश होना चाहिए |

**References**

1. National Council of Educational Research and Training. (2017). *Learning outcomes at the elementary stage*. New Delhi: NCERT. https://ncert.nic.in/pdf/announcement/Learning_Outcomes_Elementary.pdf
2. National Council of Educational Research and Training. (2022). *Foundational Learning Study: State Report – Bihar*. New Delhi: NCERT. https://ncert.nic.in/pdf/announcements/FLS_Bihar_Report.pdf

3. Bihar Education Department. (2023). राज्य के प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकों की व्यवस्था संबंधी आदेश. Patna: Government of Bihar.
4. BTBC. (2022). *Bihar State Textbook Publishing Corporation: Annual report. Patna*: BTBC. Retrieved from https://btbc.bihar.gov.in